LESSON PLAN

छात्राध्यापक संख्या -5020956 कक्षा -11वीं

विषय -संगीत गायन व वादन समय – 40 मिनट

उपविषय - उत्तर भारतीय स्वरलिपि पद्धति दिनाँक – 01/04/2023

पाठ योजना के क्रम	पाठ योजना के क्रम का विवरण
अधिगम प्रतिफल **Learning Outcomes**	अधिगमकर्ता भारत में प्रचलित स्वरलिपि पद्धतियों के विषय में जानेगा तथा भविष्य में प्रयास करेगा कि वह अपने आप स्वरलिपि बनाने में सक्षम हो सके। इसके अतिरिक्त वह यह भी जानेगा कि आधुनिक काल में घरानेदार तथा गुरुओं की दी गई बंदिशों या अन्य रचनाओं को सुरक्षित करने के लिए संगीत में स्वरलिपि पद्धति का क्या महत्व है?
अधिगम उद्देश्य **Learning Objectives**	अधिगमकर्ता उत्तरी भारतीय संगीत पद्धति में प्रचलित स्वरलिपि के चिन्हों को जानेगा तथा संगीत सीखने में उनका प्रयोग कर सकेगा।
अधिगम सामग्री **Learning Resources**	उप विषय संबंधित श्यामपट्ट, चाक, झाडन, हार्मोनियम अथवा तानपुरा आदि का प्रयोग किया जाएगा।
पूर्व ज्ञान का आकलन **Previous Knowledge Assumed**	छात्राध्यापक को ज्ञान होगा कि बच्चों को पहले से ही नवीन विषय के ज्ञान से संबंधित कुछ ज्ञान अवश्य होगा ताकि नवीन ज्ञान का पूर्व ज्ञान से संबंध स्थापित करते हुए आगे का कार्य करवाया जा सके। छात्र अध्यापक को ज्ञान होगा कि अधिगमकर्ता को कोमल स्वरों के चिन्ह तथा तीव्र स्वरों के चिन्हों की जानकारी अवश्य होगी।
पूर्व ज्ञान परीक्षण **Previous Knowledge Testing**	विद्यार्थीयों की स्मरण शक्ति की जांच करने तथा नवीन ज्ञान से संबंध स्थापित करने के लिए छात्र अध्यापक छात्रों से कुछ प्रश्न पूछेगा। 1. शुद्ध स्वरों के लिए किस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है?

	2. कोमल स्वरों को लिखने के लिए किस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है? 3. सम के लिए हम किस चिन्ह का प्रयोग करते हैं?
उद्देश्य कथन एवं विषय/ उपविषय की घोषणा **Announcement of the Topic**	अंतिम कुछ प्रश्नों का उत्तर संतोषजनक व असंतोषजनक पाकर छात्र अध्यापक विषय की घोषणा करेगा कि आज हम संगीत में उत्तर भारत में प्रचलित स्वरलिपि पद्धति के विषय में चर्चा करेंगे।

अध्यापक श्यामपट्ट पर विषय लिखेगा।

विषय सामग्री	**अध्यापक प्रस्तुतिकरण**	**विद्यार्थी की गतिविधि**	**श्यामपट्ट कार्य**
स्वरलिपि पद्धति	छात्र अध्यापक विषय की घोषणा करने के बाद अधिगम कर्ताओं को बताएगा कि जब किसी रचना को स्वर तथा ताल में बांधकर लिखा जाए तो उसे स्वरलिपि कहते हैं। संगीत की चीजों को सुरक्षित रखने के लिए स्वरलिपि अपनी अहम	छात्र अध्यापक की बात को ध्यान से सुन रहे हैं।	जब किसी रचना को स्वर तथा ताल में बांधकर लिखा जाए तो उसे स्वरलिपि कहते हैं।

	भूमिका निभाती है।		1.भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति 2.विष्णु दिगंबर स्वरलिपि पद्धति
भारत में प्रचलित स्वरलिपि पद्धतियां	छात्र अध्यापक विद्यार्थियों को बताएगा कि भारत में इस तरह की मुख्य दो स्वरलिपि पद्धतियां प्रचलित हैं। जिनके नाम हैं:- 1.पंडित भातखंडे स्वरलिपि पद्धति 2. पंडित विष्णु दिगंबर स्वरलिपि पद्धति	विद्यार्थी जिज्ञासावश पूछेंगे कि हम अपने संगीत में किस प्रकार की पद्धति का प्रयोग करते हैं।	
	छात्राध्यापक विद्यार्थियों के प्रश्न का जवाब देते हुए बताएगा कि हम उत्तर	विद्यार्थी अध्यापक की	

	भारत में पंडित विष्णु नारायण भातखंडे स्वरलिपि पद्धति का प्रयोग करते हैं।	बात को ध्यान से सुन रहे हैं तथा महत्वपूर्ण बातों को अपनी नोटबुक में नोट कर रहे हैं।	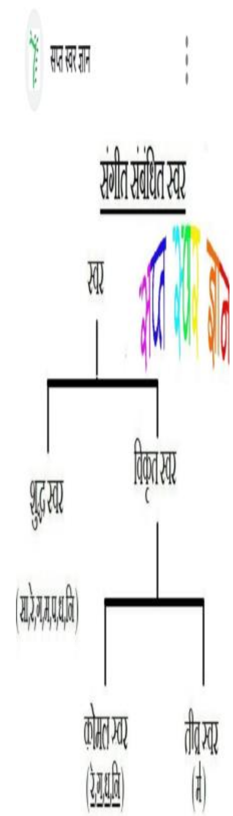
भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के स्वरों के चिन्ह	अध्यापक विद्यार्थियों को बताएगा की स्वरलिपि को लिखने के लिए भिन्न भिन्न प्रकार के चिन्हों की आवश्यकता रहती है इस पद्धति में स्वरों के लिए चिन्ह इस प्रकार हैं: शुद्ध स्वर के लिए कोई चिन्ह नहीं।	छात्र ध्यान से सुन रहे हैं तथा	

<table>
<tr>
<td>सप्तक के चिन्ह</td>
<td>कोमल के लिए स्वरों के नीचे लेटी रेखा लगाई जाती है।
तीव्र स्वर को लिखने के लिए स्वर के ऊपर खड़ी रेखा लगाई जाती है।

छात्र अध्यापक विद्यार्थियों को बताएगा कि तीनों सप्तकों को दर्शाने के लिए भिन्न-भिन्न चिन्ह प्रयोग किए जाते हैं। मध्य सप्तक के लिए कोई चिन्ह नहीं। मंद्र सप्तक के लिए स्वरों के नीचे बिंदु तथा तार सप्तक के स्वरों को दिखाने के लिए स्वरों के</td>
<td>श्यामपट्ट की ओर ध्यान से देख रहे हैं।

छात्र श्यामपट्ट से देखकर अपनी उत्तर पुस्तिका में नोट कर रहे हैं।</td>
<td>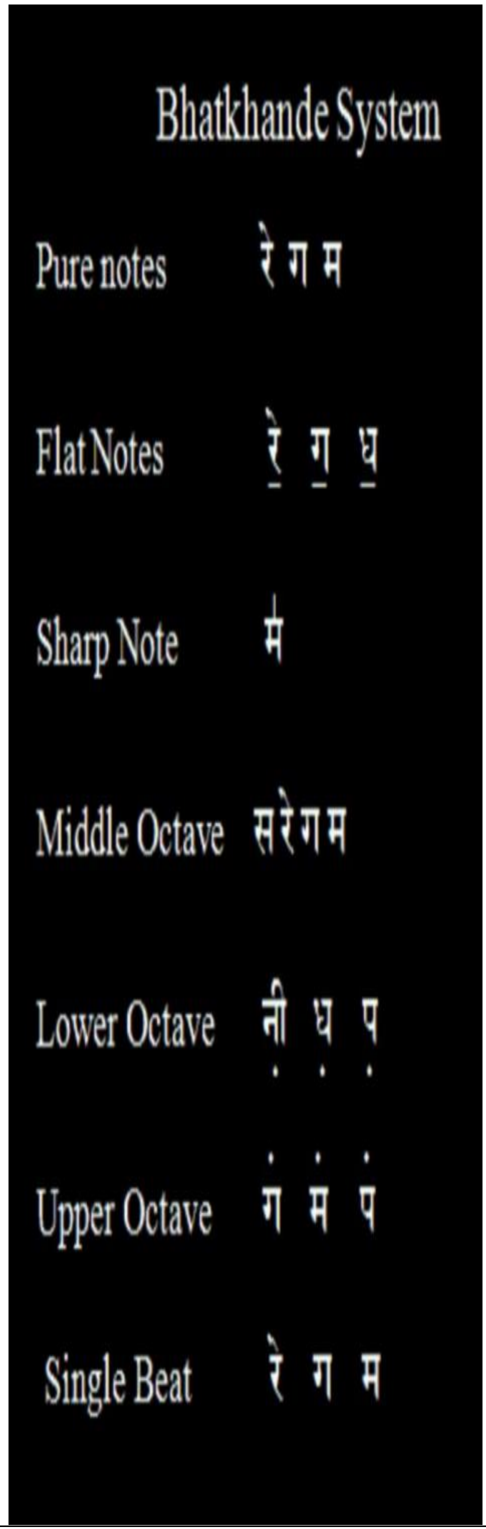
</td>
</tr>
</table>

	ऊपर बिंदु का प्रयोग किया जाता है।		
ताल के चिन्ह	छात्राध्यापक ताल के चिन्हों के बारे में बताएगा। सम के लिए × का चिन्ह प्रयोग किया जाता है। खाली के लिए 0 का प्रयोग किया जाता है। ताली के लिए 2,3,4,5…. मात्राओं का प्रयोग किया जाता है। मात्राओं को दर्शाने के लिए क्रमशः 1,2,3,4 संख्याएं प्रयुक्त की जाती है।	विद्यार्थी श्यामपट्ट पर देखकर अपनी नोटबुक में तीन ताल के चार विभाग बना रहे हैं और स्वरलिपि को लिखना सीख रहे हैं।	सम- × ताली – 2,3,4,5… खाली- 0 मात्रा – 1,2,3,4,5,….
स्वरलिपि को किस	अध्यापक छात्रों को बताएगा कि छोटे ख्याल की		

प्रकार लिखा जाता है।	बंदिश को सामान्यतः तीन ताल में लिखा जाता है।तीन ताल में स्वरलिपि को किस प्रकार लिखा जाए यह श्यामपट्ट पर लिख कर दिखाता है इसके अतिरिक्त भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में बहुत से चिन्ह प्रयोग किए जाते हैं जिन्हें हम अगली कक्षा में पढ़ेंगे।		

<u>पुनरावृति:</u> पाठ की जांच के लिए छात्र अध्यापक स्वरलिपि से संबंधित कुछ प्रश्न पूछेगा:

1.छात्रों बताइए कि छोटे ख्याल की बंदिश को अधिकतर किस साल में लिखा जाता है?

2. तीन ताल में यदि स्वरलिपि लिखनी हो तो उसके लिए कितनी मात्राओं का प्रयोग किया जाएगा?

3. सम के स्थान पर हम किस चिन्ह का प्रयोग करेंगे?

गृह कार्य : राष्ट्रीय ज्ञान को किस ताल में लिखा जाएगा तथा उस ताल के कितने विभाग बनाकर,सम तथा ताली के चिन्ह किस प्रकार लगाए जाएंगे? राष्ट्रीय गान के बोल तथा स्वरों को किस प्रकार लिखा जाएगा?

इस कार्य को विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में नोट करके लाएंगे।